१६. ज्ञान-२

दिनांक -१०/१०/२०११

सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व में दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान, जीवन ज्ञान सदा सदा अनुभव के लिये वस्तु है | इस ज्ञान के आधार पर प्रमाण रूप में जीना ज्ञानावस्था के मानव का मौलिक अधिकार है | जीवावस्था में जीने की आशा से जीना देखने को मिलता है | मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर ज्ञान का प्रमाण ही ज्ञानमूलक विचार का प्रमाण, ज्ञानमूलक व्यवहार का प्रमाण ही परम्परा है | इसी विधि से अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का सूत्र व्याख्या हो पाता है | अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था विधि से ही हर नर-नारी अपराधमुक्त, भ्रममुक्त विधि से जी पाता है | जागृतिका प्रमाण स्वरुप अनुभवमूलक विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में होता है | अनुभवमूलक विचार विधि से प्रमाण नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूप में होता है | सत्य, सह-अस्तित्व रूप में अध्ययनगम्य होना प्रमाणित होता है | इसे भली प्रकार से जाँचा गया है | इसमें हर मानव पारंगत हो सकता है | पारंगत होने का मतलब अनुभव होने से है |

अनुभवमूलक विचार विधि से विचार प्रमाण अथवा विचार रुपी प्रमाण, तीसरा विधि से पवित्र विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण का स्वरुप स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में देखा गया है, परखा गया है | सभी आक्षेपों से मुक्त जीने का विधि यही बनता है | इस विधि से मानव अपराधमुक्त, भ्रममुक्त होना स्वाभाविक है | अर्थात अनुभवमूलक विधि से अथवा सह-अस्तित्ववादी अनुभव विधि से होना देखा गया है | हर मानव अपने में समझदार होना ही चाहता है | भ्रममुक्त, अपराधमुक्त होना ही चाहता है | इस प्रकार कुछ लोगों से पूछा गया कि भ्रममुक्त, अपराधमुक्त होना चाहते हो या नहीं होना चाहते, तब भ्रम एवं अपराध से मुक्त होने के पक्ष में ही सहमत हुए | ये सब 99% सकारात्मक भाग में सहमत हुए | इस आधार पर कह रहे हैं, सभी लोग या सर्वाधिक लोग अपराध मुक्ति, भ्रम मुक्ति के पक्ष में हैं |

शिक्षा में अपराध प्रवृत्ति से मुक्ति का नहीं हो पाना ही मूल कमी रही है इसलिए परम्परा में भ्रम मुक्ति दूर रही है | जीव चेतना विधि से भ्रम और अपराध भावी है; क्योंकि शिक्षा में लाभोन्मादीअर्थशास्त्र, भोगोन्मादी समाजशास्त्र, कामोन्मादी मनोविज्ञान का अध्ययन कराया जाता है | इसमें पण्डित होने के अर्थ में सम्मानित करना भी होता है | यह समाज की हालत है | दूसरा भाषा में समुदाय का हालत है | समुदायों को समाज कहा जा रहा है | इस घटना से यह समझ में आता है कि मानव निरीह हो चुका है- भ्रम मुक्ति, अपराध मुक्ति के अर्थ में | इस बीच में धरती बीमार होने से, प्रदूषण छा जाने से अपराध के लिये अवसर बढ़ता गया | इन सभी बातों को देखने पर पता चलता है कि अपराध मुक्ति, भ्रम मुक्ति का आवश्यकता बन चुकी है | जीव चेतना विधि से जो कुछ भी हम अध्ययन करते हैं, कराते हैं, उससे भ्रम मुक्ति का रास्ता नहीं बनता है |

इस निष्कर्ष को पाते ही विकल्पात्मक प्रस्ताव को रखा है | विकल्पात्मक प्रस्ताव में विकसित चेतना का अध्ययन कराते हैं जिसमें पारंगत होने का अधिकार सर्वमानव में समाहित है | मानव में ही कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता के रूप में संवेदनशीलता सहज रूप में है | इसी से सर्वशुभ का अपेक्षा बना रहता है | सर्वशुभ का स्वीकृति होना मानव सहज है | निष्ठा होना अध्ययन बिना सम्भव नहीं है | साक्षात्कार होना, बोध होने से ही निष्ठा है | निष्ठा से ही अनुभव होता है | निष्ठा ही अनुभव

रुपी प्रमाण, विचार रुपी प्रमाण, व्यवहार रुपी प्रमाण परम्परामें प्रमाणित होता है क्योंकि सभी शुभ चाहते हैं | शुभ का ध्रुवीकरण विकसित चेतना विधि से ही सार्थक होना देखा गया है | जीव चेतना विधि से सार्थक होता नहीं | विकसित चेतना ही है जो मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में प्रमाणित होता है | यही मानवत्व है | मानव ही मानवत्व, देव मानवत्व, दिव्य मानवत्व, विधि से उपकार रूप में प्रमाणित करता है | उपकार का स्वरुप आगे पीढ़ी को समझदार बनाने से है | समझदारी ही क्रमश: व्यवहार, विचार एवं आचरण में व्यक्त होता है तथ अनुभव मूलक अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार के रूप में प्रमाणित होता है | मानव को अपना मौलिकता को प्रमाणित करने के लिये विकसित चेतना ही एकमात्र शरण है | विकसित चेतना प्रस्तावित है, यह प्रस्ताव विकल्पात्मक रूप में ही है | विकल्प अपने स्वरुप में भौतिकवाद, आदर्शवाद का विकल्प है | उक्त दोनों विचारधारा से भिन्न होने के अर्थ में विकल्प नाम है | यह अनुभव में आने के अर्थ में अध्ययन, विचार में आने के अर्थ में तर्क संगत, तथा व्यवहार में प्रमाणित होने के अर्थ में संवाद है, परम्पराहै | यही अध्ययन है | इन सभी भागों में सामंजस्यता ही मानवत्व का प्रमाण है | दूसरे विधि से मानवत्व, देव मानवत्व, दिव्य मानवत्व का प्रमाण है |

मानव आज तक शुभ के लिये ही जूझा है | शुभ का रास्ता प्रच्छन्न रहा | प्रच्छन्नता ही रहस्य है | चाहने के रूप में प्रमाणित नहीं हो पाना ही रहस्य है | प्रमाणित होने का कार्यक्रम विकसित चेतना विधि से ही होता है | चेतना का मतलब ज्ञान है | विकसित चेतना ही मानव का महिमा है, अधिकार है | केवल मानव परम्परा में हर नर, नारी में चेतना प्रमाणित होने की व्यवस्था है | इसमें प्रामाणिकता ही प्रमाण है | प्रमाण विधि से ही मानव का मौलिकता बरक़रार होता है, निरंतर बना रहता है पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में | यही मानव का मर्यादा भी है | यही प्रस्ताव है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत